ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No2, April – June, 2026/307

आचार्य चाणक्य का शैक्षिक योगदान

आदित्य नारायण त्रिपाठी एवं सुधा सिंह

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.306

शोध सार–

भारतीय शिक्षा, राजनीति और समाज–दर्शन के इतिहास में आचार्य चाणक्य का नाम अत्यन्त सम्मान और गौरव के साथ लिया जाता है। आचार्य चाणक्य को कौटिल्य तथा विष्णुगुप्त के नाम से शायद कम ख्याति मिली है किन्तु वर्तमान राजनैतिक सन्दर्भ में चाणक्य नाम की महिमा में अपार सम्भावनाएँ परिलक्षित होती हैं। भारत के इतिहास में आचार्य चाणक्य महान शिक्षक, दार्शनिक, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ तथा कूटनीतिज्ञ के रूप में एक बड़ी पहचान स्थापित की है। चाणक्य मौर्य वंश की स्थापना के साथ–साथ भारतीय शिक्षा, प्रशासन, राजनीति तथा नैतिक जीवन की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आचार्य चाणक्य के जीवन से एक महत्वपूर्ण प्रेरणा प्रसारित होती है कि ''एक शिक्षक मात्र ज्ञान का ही प्रसार नहीं करता है, बल्कि वह समाज और उत्तम राष्ट्र के निर्माण में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

शब्द–संकेत– नैतिक जीवन, सृजन, अन्वीक्षिकी, सदाचार, सत्यनिष्ठा, किंशुक फूल, कर्त्तव्य परायणता, सुशासन, प्रबन्धन, प्रासंगिकता, अनुशासन।

भूमिका–

आचार्य चाणक्य का शैक्षिक योगदान भारतीय शिक्षा व्यवस्था के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सृजन का आधार भी कहा है। उनका विचार आज भी शिक्षा, नेतृत्व, प्रशासन के साथ–साथ चरित्र–निर्माण में भी प्रासंगिक है।

आचार्य चाणक्य का जन्म चौथी शताब्दी ईसा पूर्व माना जाता है। वह तक्षशिला विश्वविद्यालय के विद्वान् आचार्य थे। पूरी दुनिया में तक्षशिला प्रमुख शिक्षा केन्द्र के रूप में विख्यात था, जहाँ भारत के साथ–साथ दुनिया भर के विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे। चाणक्य वेद–दर्शन, राजनीति, अर्थशास्त्र, युद्धनीति एवं न्यायशास्त्र के ज्ञाता थे। उन्होंने अपनी विद्वता और शिक्षा के बल पर चन्द्रगुप्त मौर्य को प्रशिक्षित कर एक योग्य शासक बनाया। उनके मार्गदर्शन में चन्द्रगुप्त मौर्य ने एक विशाल मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। यह दृष्टान्त चाणक्य की शिक्षण क्षमता, विद्वता और शैक्षिक दृष्टिकोण का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। आचार्य चाणक्य शिक्षा को मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा धन मानते हैं। उनके अनुसार शिक्षा ऐसा धन है जिसे कोई चुरा नहीं सकता है तथा वह जीवन भर मनुष्य का साथ निभाती है। चाणक्य का कथन है कि– ''विद्या धनं सर्वधन प्रधानम्'' अर्थात् विद्या सभी प्रकार के धनों में सर्वश्रेष्ठ है। उनका विचार है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं है, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, बुद्धि, नैतिकता, आत्मविश्वास तथा व्यावहारिक क्षमता का विकास करना भी है। चाणक्य ऐसी शिक्षा की वकालत करते थे जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर, कर्तव्यनिष्ठ और समाजोपयोगी बना सके। चन्द्रगुप्त मौर्य ने तक्षशिला में चाणक्य के सान्निध्य में रहकर शिक्षा ग्रहण की थी। कौटिल्य

- **विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र, संत तुलसीदास पी.जी. कॉलेज, कादीपुर, सुल्तानपुर**
- **सहायक आचार्य, संत तुलसीदास पी.जी. कॉलेज, कादीपुर, सुल्तानपुर**

ने आन्वीक्षिकी (तर्क और दर्शन) त्रयी (तीन वेद– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और उनके ब्राह्मणादि) वार्ता और दण्डनीति का भी उल्लेख किया है।

आचार्य चाणक्य एवं तक्षशिला–

आचार्य चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय के प्रमुख आचार्यों में से एकथे। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। चाणक्य यह मानते थे कि शिक्षा केवल एक विषय तक सीमित नहीं होनी चाहिए। तक्षशिला में वह एक शिक्षक के रूप में राजनीति, अर्थशास्त्र, युद्धकला, दर्शन, कृषि, चिकित्सा तथा प्रशासन जैसे अनेक विषयों की शिक्षा प्रदान करते थे। वह विद्यार्थियों का बहुआयामी विकास के पक्षधर थे।

उन्होंने केवल सैद्धान्तिक शिक्षा को पर्याप्त नहीं माना बल्कि उनका अटूट विश्वास था कि विद्यार्थी को वास्तविक जतीवन की समस्याओं का सामना अतिविश्वास के साथ कर उसके समाधान में सक्षम होना भी आवश्यक है। इसलिए वह शिक्षा को व्यवहार और अनुभव के साथ जोड़कर देखते थे। आचार्य चाणक्य विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता के विकास पर भी बल देते थे। उन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य को इस प्रकार प्रशिक्षित किया कि वह एक सफल और कुशल सम्राट बन सके। इससे यह स्पष्ट होता है कि आचार्य चाणक्य शिक्षा को नेतृत्व निर्माण का भी माध्यम मानते थे।

आचार्य चाणक्य का मत है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए। उनके अनुसार ज्ञान तभी सार्थक है जब उसके साथ सदाचार और नैतिकता का मिश्रण हो। आचार्य चाणक्य विद्यार्थियों के विकास हेतु सत्यनिष्ठा, अनुशासन, परिश्रम, आत्मसंयम, ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता एवं देशभक्ति जैसे गुण हों। उनका विश्वास था कि चरित्रहीन व्यक्ति का ज्ञान समाज के लिए हानिकारक हो सकता है। इसलिए शिक्षा के साथ–साथ नैतिक मूल्यों का समावेश होना अति आवश्यक है।

आचार्य चाणक्य का विचार है कि शिक्षा एक गुप्त धन के समान है जो जीवन के प्रत्येक मोड़ पर आपके काम आती है। जिस व्यक्ति के पास शिक्षा रूपी ज्ञान का अभाव है, वह निश्चित रूप से पशु के समान है। उनका स्पष्ट मत है कि जो माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षित नहीं बनाते, वह उनके सबसे बड़े शत्रु के समान होते हैं। अनपढ़ व्यक्ति का विद्वानों के बीच वैसे ही अपमान होता है जैसे हंसों के बीच बगुले का।

चाणक्य ने शिक्षा प्राप्त करने की प्रक्रिया और अनुशासन को अधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार 5 वर्ष तक बच्चे को प्यार करना चाहिए। 10 वर्ष तक कठोर अनुशासन में रहना चाहिए एवं 16 वर्ष तक की आयु होने पर उसके साथ मित्रवत व्यवहार करना चाहिए। चाणक्य के शैक्षिक विचारों में केवल किताबी ज्ञान नहीं बल्कि उच्च चरित्र, कर्त्तव्य परायणता और राष्ट्रीयता की भावना का विकास भी सम्मिलित है। उनका विचार है कि ज्ञान कभी भी और कहीं भी किसी से प्राप्त या सीखा जा सकता है। इसलिए सीखने की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहनी चाहिए।

आचार्य चाणक्य भारतीय गुरु–शिष्य परम्परा को सशक्त बनाने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। उनका विचार था कि गुरु मात्र ज्ञान वाहक नहीं बल्कि विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माणकर्ता भी होना चाहिए। वह गुरु–शिष्य सम्बन्धों में विश्वास, सम्मान और अनुशासन जैसे आदर्श

पर आधारित मानते थे। चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ उनका सम्बन्ध आदर्श गुरु–शिष्य परम्परा का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण कहा जा सकता है।

अर्थशास्त्र में शैक्षिक योगदान–

परम विद्वान् आचार्य चाणक्य की प्रसिद्ध पुस्तक अर्थशास्त्र भारतीय ज्ञान–परम्परा का सबसे महत्वपूर्ण वाहक है। यह ग्रन्थ केवल अर्थ व्यवस्था का संचालन ही नहीं बल्कि शिक्षा, प्रशासन, राजनीति और सामाजिक परम्परा का भी महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। अर्थशास्त्र में शिक्षा का महत्व, शिक्षक की भूमिका, प्रशासनिक प्रशिक्षण, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का भी विवेचन किया गया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र आज भी राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन एवं अर्थशास्त्र तथा प्रबन्धन के विद्यार्थियों में लोकप्रिय हैं।

रूपयौवनसंपन्ना विशाल कुलसम्भवाः।

विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः।।

अर्थात् व्यक्ति कितना ही सुन्दर क्यों न हो, उसका सम्पन्न यौवन क्यों न हो, वह उत्तम कुल में पैदा हुआ हो, लेकिन उसके पास अगर शिक्षा नहीं है और वह विद्या से हीन है तो वह सुगन्ध रहित किंशुक फूल की भाँति किसी भी रूप में शोभा नहीं देता है। इसलिए व्यक्ति को हमेशा शिक्षा का अर्जन करना चाहिए और मौका मिलने पर उसका सदुपयोग भी करना चाहिए। ऐसे ही व्यक्ति को सफलता प्राप्त होती है और समाज में उसे मान–सम्मान भी प्राप्त होता है।

आचार्य चाणक्य का मत है कि शिक्षा तभी सफल है जब वह नैतिक मूल्यों का विकास करे। उन्होंने विद्यार्थियों को हमेशा न्याय, सत्य, अनुशासन एवं कर्तव्य के पालन की प्रेरणा प्रदान की है। उनका विचार है कि बिना नैतिकता के ज्ञान विनाशकारी हो सकता है। समाज की उन्नति नैतिक नागरिकों पर ही निर्भर होती है। राष्ट्र निर्माण हेतु इस देश में चरित्रवान युवकों की आवश्यकता आज भी प्रासंगिक है। चाणक्य शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का प्रमुख साधन मानते थे, उनका विश्वास था कि शिक्षित और जागरूक नागरिक ही एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। वह शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता, प्रशासनिक दक्षता, आर्थिक विकास तथा सुरक्षा और सुशासन में वृद्धि का प्रयास सर्वोपरि रखा है। चन्द्रगुप्त मौर्य को प्रशिक्षित करके उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि शिक्षा के माध्यम से योग्य नेतृत्व का निर्माण किया जा सकता है।

स्त्री शिक्षा के प्रति भी उनका कथन है कि प्राचीनकाल में स्त्रियों की शिक्षा अत्यन्त सीमित थी, चाणक्य ने महिलाओं की सामाजिक भूमिका को बेजोड़ माना है। उन्होंने परिवार और समाज के विकास में महिलाओं की भूमिका स्वीकार किया है। इससे यह संकेत मिलता है कि शिक्षित महिला परिवार और समाज के विकास में बड़ा योगदान कर सकती है।

प्रबन्धन के सम्बन्ध में भी आचार्य चाणक्य ने अपने विचार रखे हैं। उन्होंने योजना निर्माण, संगठन, नेतृत्व, निर्णय क्षमता, मानव संसाधन प्रबन्धन तथा संकट प्रबन्धन जैसे विषय पर भी सिद्धान्त विकसित किया है जो आज भी प्रासंगिक है। आज की शिक्षा मात्र डिग्री प्राप्त करने का माध्यम बन रही है किन्तु आचार्य चाणक्य का शैक्षिक विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह शिक्षा को व्यक्तित्व निर्माण का साधन मानते थे।

आचार्य चाणक्य की शिक्षा और उसकी प्रासंगिकता

वर्तमान समय में जहाँ शिक्षा धीरे–धीरे अपने मूल उद्देश्य को खोती जा रही है, वहीं आचार्य चाणक्य के शैक्षिक विचार आज भी प्रासंगिक दिखाई पड़ते हैं। वह शिक्षा को चरित्र निर्माण का साधन मानते थे। व्यवहारिक शिक्षा पर भी वह बल देते थे। वह नेतृत्व विकास की आवश्यकता को स्वीकार करते थे। शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश, राष्ट्र निर्माण के प्रति उत्तरदायी मानने के साथ–साथ वह अनुशासन और परिश्रम के महत्व को स्वीकार करते हुए रोजगार परक शिक्षा की भी वकालत करते थे। आज के आधुनिक परिवेश में लागू नई शिक्षा नीति में भी विविध शिक्षा, कौशल विकास तथा मूल्य आधारित शिक्षा पर अधिक बल दिया जा रहा है, जो आचार्य चाणक्य द्वारा प्रस्तुत शिक्षा में साम्यता स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

निष्कर्ष–

आचार्य चाणक्य भारतीय शिक्षा परम्परा के महान नायक कहे जा सकते हैं। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति एवं विकास का माध्यम माना। तक्षशिला विश्वविद्यालय में उनके शिक्षण कार्य, चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे राजा का निर्माण, अर्थशास्त्र जैसे महान ग्रन्थ की रचना तथा नैतिक एवं व्यवहारिक शिक्षा पर बल भारतीय शिक्षा के इतिहस में अलग स्थान रखता है।

आचार्य चाणक्य द्वारा प्रस्तुत शिक्षा चरित्र निर्माण, नेतृत्व विकास, नैतिक शिक्षा, राष्ट्र निर्माण तथा व्यावहारिक ज्ञान जैसे विषयों पर आधारित था। आज के बदलते सामाजिक भौतिकवादी परिवेश में भी उनके विचार उतने ही उपयोगी और विचारणीय हैं जितने तत्कालीन समय में थे। इसलिए आचार्य चाणक्य को भारतीय शिक्षा दर्शन का एक महान स्तम्भ माना जाता है, जिनकी शिक्षा इस देश के विद्यार्थियों को निरन्तर मार्गदर्शन करती रहेगी।

सन्दर्भ सूची–

1. वाचस्पति गैरोला (2010), अनु. अर्थशास्त्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
2. शर्मा, रामशरण (2014), प्राचीन भारत का इतिहास, ओरियण्ट ब्लैक स्वान, नई दिल्ली।
3. अल्तेकर, ए.एस. (2009), प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, वाराणसी।
4. थापर, रोमिला (2013), अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली।
5. चौबे, एस.पी., भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समानतायें, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. पाण्डेय, उमेशचन्द्र, भारतीय शिक्षा का इतिहास, किताब महल, इलाहाबाद।